कबीर वाणी का मूल आधार – अध्यात्म चेतना

कबीर हिंदी सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर के काव्य व्यक्तित्व का आंकलन करते हुए लिखा है – 'कबीर की उक्तियों में कहीं–कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। आचार्य हजार प्रसाद द्विवेदी का मत है कि, 'हिंदी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ। भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। उनके संतरूप के साथ उनका कवि रूप बराबर चलता रहता है।'

आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी कबीर को हिंदी का सर्वप्रथम रहस्यवादी कवि मानते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में ''कबीर का व्यक्तित्व और निर्द्वन्द्व दृष्टिकोण इतना प्रभावशाली था कि उनके विचारों के आधार पर एक संप्रदाय चल पड़ा जिसे संत संप्रदाय की संज्ञा मिली। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते है। कि 'भाषा, संवेदना विचार प्रणाली सभी दृष्टियों से कबीर' शास्त्रीयता के समक्ष स्वांटी देसीपन को महत्व देते हैं।'' डॉ. परशुराम चतुर्वेदी के शब्दों में कबीर साहब ने अपनी पंक्तियों में जो तत्कालीन जनजीवन का चित्र निर्मित किया है, वह अत्यंत मार्मिक और सजीव है। उन्होंने किसानों, वनजीवियों, बंजारों, मठियारों, महाजनों आदि की जीवन पद्धति को बहुत करीब से देखा है और वे दरबारी, सिपाही, कोतवाल आदि के कार्यों से भी पूर्ण परिचित जान पड़ते हैं। वे पंडितों, काजियों, पीरों, पुजारियों या जोगियों तथा पाखंडियों की आलोचना करते समय प्रधानतः उनकी मौलिक दुर्बलता को ही अपना लक्ष्य बनाते हैं।''

कबीर ने अपने काव्य में जनपदीय जीवन के स्वरूप को प्रत्यक्षतः अपना वर्वय नहीं बनाया है, अपितु रूपकों, प्रतीकों, अन्योक्तियों आदि के रूप में उनका संयोजन किया है। कबीर के काव्य को समझने के लिए उनक समसामयिक जनपदीय जीवन को जानना आवश्यक है। ग्राम्य–जीवन की लोक प्रचलित एवं सर्वजन सुबोध शब्दावली के माध्यम से अभिव्यंजित होकर कबीर के गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धांत और अरूप दर्शन की शब्दातीत अनुभूति भी सामान्य जन के लिए संवेद्य बन सकी है। डॉ. पारसनाथ तिवारी के शब्दों में 'कबीर के पूर्व यद्यपि गोखबानी' में अथवा सिद्धों की वाणियों में इस शैली के कुछ रूपक मिल जाते हैं, जिनमें जनपदीय जीवन की झांकी प्राप्त होती है, किंतु इस दिशा में कबीर का विशिष्ट योगदान है। जो संजीदगी उनके रूपकों में है, वह उनके पूर्ववर्ती किसी भो हिंदी कवि की रचना में दिखाई पड़ती। आगे चलकर जायसी, तुलसी सूर तथा कुछ रीतिकालीन कवियों ने भी इस प्रकार के रूपकों की सृष्टि की, किंतु जैसे–जैसे जनजीवन से साहित्यिकों का संपर्क छूटता गया, इस प्रकार के हँसते, बोलते रूपकों की परंपरा भी समाप्त हो गई। कबीर का व्यक्तित्व

– व्यक्तित्व व्यक्ति का समग्र अस्तित्व है, जो विशिष्ट एवं अद्वितीय होता है, और जिसका अनुकरण करना संभव नहीं होता।' नितांत मौलिक सर्वथा क्रांतिदर्शी एवं पूर्णतया युगांतकारी व्यक्तित्व हिंदी काव्य के इतिहास में कबीर, भारतेन्दु, निराला और मुक्तिबोध जैस कवियों को ही प्राप्त है।

कबीर के व्यक्तित्व का आंकलन करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें परस्पर विरोधी गुणों का पुंज कहा है। उन्होंने अपने कथन को स्पष्ट करते हुए कहा है – कबीर स्वभाव से फक्कड़ आदत से अक्खड़ भक्त के सामने निरीह, वेशधारी के सामने प्रचंड, दिल से साफ दिमाग से दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वंदनीय थे।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने लिखा है – 'कबीर पहुँचे हुए ज्ञानी थे। उनका ज्ञान पोथियों की नकल नहीं था और वह सुनी–सुनाई बातों का बेमेल भंडार था। पढ–लिखे तो वे थे नहीं, परंतु सत्संग से जो बाते मालूम हुई उन्हें अपनी विचारधारा के अनुसार मानसिक पाचन से, सर्वथा अपनी ही बना लेने का प्रयत्न करते थे।' उन्होंने अपने युग और समाज के लिए जिन बातों को उपयोगी और जीवन दायिनी समझा, उनको संपूर्ण आत्म–विश्वास के साथ बेहिचक कहा। इसी तथ्य को रेखांकित करने के लिए अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔछ' न कहा है कि कबीरदास ने अपने विचारों के लिए कोई आधार नहीं ढूंढा, किसी ग्रंथ का प्रमाण नहीं चाहा। उन्होंने सोचा कि जो बात सत्य है, वास्तविक है, उसकी सत्यता और वास्तविकता ही उसका प्रधान आधार है। उसके लिए किसी ग्रंथ विशेष का सहारा क्या है। इस मौलिकता और आत्मविश्वास का अपरिहार्य परिणाम यह हुआ है कि कबीर के व्यक्तित्व में एक प्रकार की अक्खड़ता दिखाई पड़ती है। कबीर जिस धर्म और समाज के बीच उत्पन्न हुए थे और जिनके बीच उन्होंने अपने व्यक्तित्व का विकास किया था वह घोर पाखण्ड, कदाचार, विषमता और पारस्परिक विद्वेष का शिकार था। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर की अक्खड़ता के मूल उत्स तक पहुँचने का प्रयास किया है– कबीर ने यह अक्खड़ता योगियों से विरासत में पाई थी। संसार मे भटकते हुए जीवों को देखकर करूणा के अश्रु से वह कातर नहीं होते थे, बल्कि और भी कठोर होकर उसे फटकार बताते थे।

कबीर के व्यक्तित्व की अक्खड़ता उन्हें सच्चे संत की तरह 'कर्म की रेख पर मेख' मारने के लिए उकसाती हैं कबीर की अक्खड़ता का परिचायक यह पद है –

ज्ञान को गेंद कर सुर्त का डंडकर

खेल चौगान–मैदान माँही।

जगत का भरमना छोड़ दे बालके

आय जा मेघ–भगववन्त पाहीं।।

कबीर अज्ञान, असत्य और मिथ्याचार को नष्ट करने के लिए किसी भी सीमा तक निर्मम हो सकते हैं। इस निर्ममता ने उनके व्यक्तित्व में एक ऐसी लापरवाही भर दी ह कि घर फूंक मस्ती का दूसरा नाम है। उसके लिए कोई अपना नहीं अर्थात् सभी अपने है।

हम घर जारा आपनां, लिया मुराड़ा हाथ

जो घर जारै आपना, चलै हमार साथ।।

कबीर घर जोड़ने की माया से मुक्त हो चुके थे, इसलिए वे अपने उतरे हुए शीश पर पैर रखकर अपने गंतव्य तक पहुँचने का साहस अपने भीतर पाते थे। उन्होंने कहा है –

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।

रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।

आज के युग में कबीर हमारे लिए विशेष सार्थक और संगत सिद्ध होते है क्योंकि कबीर उस हर दीवार को तोड़न के लिए बद्ध–परिकर हैं जो पाखंड, अनाचार और विषमता से बनती है। डॉ. प्रकाश चंद्र गुप्त ने लिखा है – ''सामाजिक शोषण, अनाचार व अन्याय के विरूद्ध संघर्ष में आज भी कबीर का काव्य तीखा अस्त्र है। कबीर से हम रूढ़िगत, सामन्ती, दुराचार और अन्यायी सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध डटकर लड़ना सीखते हैं और यह भी सीखते हैं कि विद्रोही कवि किस प्रकार अंत तक शोषण के दुर्ग सामने अपना माथा ऊँचा रखता है।

कबीर को परमात्मा से गहन प्रेम था। परमात्मा की दिव्य अनुभूति के अमूल्य धन के वे धनी थे। उनकी बहुत सी उक्तियाँ इस बात की ओर इंगित करती हैं। यद्यपि वे अक्षर ज्ञान से शून्य थे, परंतु अत्यंत तेजस्वी चेतना से स्पंदित व्यक्तित्व का उनका। आचार्य शुक्ल ने उन्हें निर्गुण भक्ति धारा का ज्ञानमार्गी कवि कहा है। चूंकि कबीर पढ़े लिखे नहीं थे, उनकी भाषा में एकरूपता का अभाव है। उसमें पूर्वी अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और पंजाबी का मिश्रित रूप है, शुक्ल जी ने इसे 'साधुक्कड़ी' भाषा की संज्ञा दी है। उनकी भाषा में तत्सम शब्द कम तद्भव अधिक है। अरबी–फारसी के लोक प्रचलित रूपों का भी उन्होंने स्वतंत्रता से प्रयोग किया है। इनके व्यक्तित्व की भांति इनकी शैली में भी कोई दुरूहता या कृत्रिमता नहीं है।

प्रमुख रचनाएँ – अभी तक उपलब्ध साहित्य में 'बीजक' कबीर की प्रामाणिक रचना मानी जाती है। इसके तीन भाग साखी–सबद और रमैनी है। 'साखी' दोहा शैली में और 'सबद' और 'रमैनी' पदों में है।